सुरभि-सेवा

(कर्तव्य के प्रति जागृति एवं प्रयत्न विद्या)

10·3
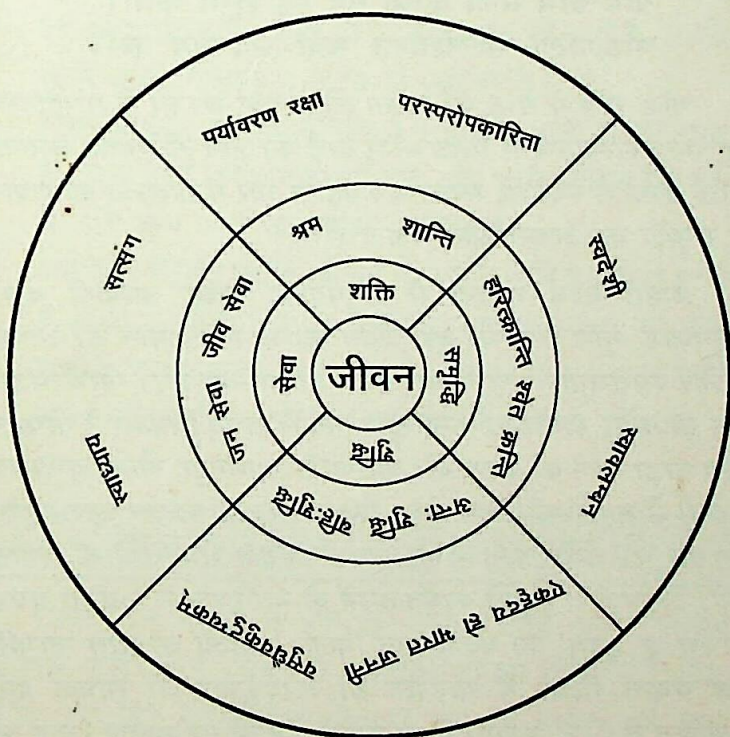
लेखन : संपादन

शरद कुमार साधक

सुरभि शोध संस्थान

बी 27/75 डी. रवीन्द्रपुरी, वाराणसी-221 010 (उ.प्र.)

प्रकाशकीय....

सुरभि शोध संस्थान गोरक्षा मूलक, स्थानीय उद्योग प्रधान, नागरिक शिक्षण का कार्य कर रहा है। महामना पं. मदनमोहन मालवीय का श्लोक हमारा दिशादर्शक मंत्र है :

ग्रामे ग्रामे सभा कार्या गेहे गेहे शुभा कथा।
पाठशाला मल्लशाला गवां सदनमेव च।।

गाँव-गाँव में सभा कर जनता को जगाना, घर घर में सत्साहित्य पहुँचाकर संस्कार देना, विद्या मंदिर खड़े कर ज्ञान की ज्योति जलाना, शक्ति केन्द्रों से स्वदेशी, स्वालम्बन बढ़ाना और गोशालाओं को पोषण व समृद्धि का अजस्र स्रोत बनाना है।

हमारी कार्य योजना से अनुपयोगी गोवंश उपयोगी बना। अनुपजाऊ भूमि में उपज हुई। श्वेत क्रान्ति हरित्क्रान्ति को आधार मिला। स्वरोजगार चाहने वाले तरुण लाभान्वित हुए। गोरस भंडार और गृहोद्योग, ग्रामोद्योग केन्द्र खुलने लगे। समग्र विकास ने **गोपाल ग्राम** खड़ा करने की प्रेरणा दी। वाराणसी, डगमगपुर, नौगढ़, वृन्दावन, दिल्ली में बहुआयामी श्रम सेवा, शिक्षा, संस्कार प्रकल्प आरंभ हुए। देश भर की गोशालाओं में नई चेतना आयी। सेवार्थियों के शिविर लगे। अनुभवी व त्यागी कार्यकर्ताओं के मार्गदर्शन से **'अर्निंग एण्ड लर्निंग थ्रू डूइंग'** का पदार्थ पाठ मिला। **कर्तव्य के प्रति जागृति एवं प्रयत्न विधा** में माननीय श्री शरदकुमार जी साधक द्वारा रेखांकित वे बिन्दु उजागर किये गये हैं, जिनमें नई समाज रचना की दृष्टि से **सर्वोदय-विचार सार** है और **समानधर्मी संस्थाओं का सहकार** है। साधक जी संस्थान के अधिष्ठान हैं, वैसे ही **'आचार्य कुल'** के संपादक तथा **'जय जगत'** के भी संयोजक हैं।

संवेदना, पारस्परिकता, श्रमनिष्ठा, ज्ञान निष्ठा, समाज निष्ठा, देश प्रेम और विश्वेश प्रेम जगाने वाली यह रचना आशा है **सुरभि सेवा** को सार्थक बनायेगी।

मालवीय जयन्ती
25 दिसम्बर 1995

सूर्यकान्त जालान
निदेशक

पृथ्वी-दर्शन

माता भूमिः पुत्रोऽहम् पृथिव्याः

- हम धरती पुत्र हैं। इस धरा की १०% भूमि हिमाच्छादित है। १५.५% रेगिस्तान या पथरीली है। ७.४% दलदली है। २% शहर, खदान, कारखाना, सड़क घेरे हुए है। करीब ३% अनुपजाऊ है। कृषि योग्य भूमि ११% भी नहीं है, जबकि खाने वाली जनता ५ अरब से अधिक है।
- विश्व में प्रति व्यक्ति औसत २.५ करोड़ भूमि की सुलभता है। कुछ देशों की जनसंख्या कम और भूमि अधिक है। कुछ में भूमि कम और जनसंख्या अधिक है।
- अमेरिका में प्रति व्यक्ति औसत १२ एकड़ भूमि है, किन्तु भारत में आधा एकड करीब है। इसलिए पशुधन बढ़ायें, गो नस्ल सुधारें, फलोत्पादन पर ध्यान दें। खान–पान, रहन–सहन, तौर–तरीके ऐसे रखें कि हम भी जियें तथा जीव–जगत भी जीये।

जीवन निष्ठा-जीव निष्ठा

जिस दिन मनुष्य ने पशु को अपना खाद्य पदार्थ मानना छोड़कर उसे अपने जीवन में जीविका अर्जन के लिए दाखिल किया, उस दिन सांस्कृतिक विकास का एक चरण आगे बढ़ा। जो पशु जीवन को सम्पन्न बनाने तथा समृद्धि बढ़ाने में सहायक हुए, उनमें गाय और बैल का योगदान विशेष है। मनुष्य–मनुष्य की हत्या न करे– यह **जीवन निष्ठा** है और कम से कम गाय की हत्या न करे– यह **जीव निष्ठा** है। इसी निष्ठा के चलते करुणा उपजी। पशु–पक्षी, पहाड़–जंगल, नदी–तालाब, वृक्ष–वनस्पति को नष्ट होने से बचाने की प्रेरणा मिली और **सर्वतोभद्र जीवन दर्शन** अस्तित्व में आया। •

आजीविका का आधार

भारत कृषि प्रधान देश है। गाय खेती और किसानी को जोड़े रखती है। गाय को दाना–पानी देने, गोबर एकत्र करने और दूध दुहने का काम करने वाली बालिकाओं को 'दुहिता' कहा जाता है। दही जमाने, मक्खन निकालने, छाछ तथा घी बनाने का काम महिलाएं करती हैं। ४६ हजार ग्रामीण दुग्ध उत्पादन सहकारी संगठनों से जुड़े ५० लाख से अधिक परिवारों की रोजी–रोटी का साधन गाय है। भारवाही बैलों पर ३ करोड़ गाड़ीवान निर्भर हैं। कृषि से करीब ५४ करोड़ का योगक्षेम चलता है।

जनगणना के अनुसार जब भारत में ८६ करोड़ लोग थे, तब **४५ करोड़ पेड़** और **१५ करोड़ ही पशु** थे। वृक्षारोपण किये बगैर, तथा पशु सम्पदा बढ़ाये बिना सबका पेट नहीं भर पायेगा।

•

गोपालन

पोषक पदार्थ प्राप्त करना है, घर की अवस्था सुधारना है, जमीन को उर्वर बनाये रखना है, विकेन्द्रित ऊर्जा स्रोत बढ़ाना है और घी–दूध के भण्डार खड़े करना है तो सर्वोत्तम साधन है– **गोपालन**।

•

वैकल्पिक ऊर्जा

- औसत गाय प्रतिदिन १० किलो गोबर देती है।
- एक गोवंश से प्रतिवर्ष ३६.५ कुन्तल अर्थात् ३–४ गाड़ी गोबर, गोमूत्र मिलता है।
- बस्ती का कूड़ा–कचरा, वृक्षों की सूखी पत्तियाँ और मिट्टी मिला कर एक किलो गोबर घोल से ४० किलो खाद तैयार होती है।
- गोबर गैस से निकली स्लरी (खाद) में गोबर खाद से अधिक उर्वरता रहती है। वह ३–४ माह के स्थान पर २०–२५ दिन में ही मिलने लगती है।
- भारतीय गोवंश के गोबर–गोमूत्र का पूरा उपयोग हो तो भारत की आधी आबादी को गैस (ईंधन) और ढाई करोड़ टन जैविक खाद मिल सकती है।

हलधर–गोपाल

- विश्व की १२% कृषि भूमि भारत के पास है और पशु १६%।
- भारत के १८% भूभाग पर ही कृषि होती है।
- कृषि में ६५% पशु शक्ति, २०% मानवशक्ति और १५% यन्त्र शक्ति लगती है।
- गोवंश से सालाना ३२ करोड़ टन गोबर मिलता है।
- १३ से ४०% गोबर जलावन के काम आता है, शेष खाद में।
- खेतों के लिए न पर्याप्त खाद है, न खाना पकाने के लिए ईंधन। क्योंकि विकसित देशों में प्रति सौ मनुष्यों के पीछे २६८ पशु हैं, किन्तु भारत में ३८, उनमें गायें मात्र ६ हैं।
- नडेप पद्धति की खाद, गोबर गैस की स्लरी, गो–विज्ञान, कृषि–विज्ञान आदि को बढ़ावा दें तो हलधर और गोपाल प्रभावी हो जायेंगे। कम से कम २० करोड़ गायें, १३ करोड़ बैल हों और हर हाथ को काम, हर खेत को पानी देने की व्यवस्था करें, तब समवेत स्वर गूँजेगा–

मेरे देश की धरती सोना उगले उगले हीरे मोती।

बैल और ट्रैक्टर

- गाय से दूध मिलता है। बैल अन्न उत्पादन में मददगार है। उनका गोबर–गोमूत्र जमीन की फलद्रुपता बढ़ाता है। घास–भूसा खाकर गोवंश प्रसन्न रहता है। गाय–बैल पालना आसान है। छोटे किसान, छोटी–छोटी जोत में आजादी के साथ खाते–कमाते हैं और खेतिहर मजदूरों को भी खिलाते हैं।
- बड़े किसान ट्रैक्टर लेने लगे हैं, जो न दूध देते हैं, न खाद। उनके लिए लोहा, फौलाद, तेल आयात करने हेतु कीमती उत्पाद निर्यात होता है। कल–पुर्जे बनाने वाले कारखाने प्रदूषण फैलाते हैं। करोड़ों–अरबों की पूंजी लगा कर बनाये जा रहे ट्रैक्टर अभी तक उतनी ही जुताई करते हैं, जितनी भैंसे। बैल उनसे आठ गुनी जुताई करते हैं। उतने ट्रैक्टर बनाने के लिए एक हजार अरब रुपये का कर्ज लेना होगा। हर ट्रैक्टर के पीछे बेकार होने वाले औसत छः मजदूरों को कौन खिलायेगा?
- बैलों और मजदूरों को खाने वाले नहीं, खिलाने वाले यंत्र बनायें। बैल चालित मशीनें, बैल चालित ट्रैक्टर बढ़ायें। किसानों के साथ बैलों की क्षमता एवं कार्य दिवस बढ़ाये बिना हमारी अर्थनीति अनर्थनीति बन जायेगी और पारस्परिकता भी नहीं रह पायेगी।

जैविक और रासायनिक खाद

- कम्पोस्ट, गोबर गैस की स्लरी या नडेप पद्धति से बनी जैविक खाद से भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ती है और रासायनिक उर्वरकों से घटती है।
- गोमूत्र छिड़कने से फसल को रोग–कीड़े नहीं लगते और न खाने वालों का स्वास्थ्य खराब होता है, किन्तु कीड़ों और बीमारी से बचाने वाले रसायनों का विष धीरे–धीरे अनाज–सब्जी के माध्यम से मानव शरीर में पहुँचता है और स्वास्थ्य को हानि पहुँचाता है।
- रासायनिक खाद देने पर खेतों की नमी बनाये रखने के लिए कृत्रिम उत्पाद का खर्च बढ़ता है, जबकि जैविक खाद से मिट्टी की नमी बनी रहती है।
- रासायनिक खाद से पोषित चारागाह में गोवंश तब तक नहीं चरता, जब तक कि जैविक खाद पोषित चारागाह सुलभ रहता है। उसमें उत्पन्न चारे से गायें अपने घाव ठीक कर लेती हैं।
- रासायनिक खाद से पोषित उपज उतनी स्वादिष्ट नहीं होती, जितनी जैविक खाद–पोषित होती है।
- जैविक खाद किसान को लक्ष्मी दे जाती है, जबकि उर्वरक किसान की लक्ष्मी ले जाते हैं।

पशुधन

- सरकारी आँकड़ों के अनुसार ७ करोड़ ४० लाख बैल और ८० लाख भैसों से प्रतिवर्ष १० हजार करोड़ रुपये की ४ हजार करोड़ हार्स पावर ऊर्जा प्राप्त होती है, जिससे ६० लाख टन पेट्रोलियम पदार्थ की बचत होती है।
- भारतीय पशुधन से ६० अरब रुपये का दूध, ५० अरब रुपये का परिवहन, ३० अरब रुपये की जैविक खाद और ३० करोड़ रुपये की गैस मिलती है। पशुधन में देश की ४० खरब की सम्पत्ति लगी है।

उद्योग सीमा

- बड़े उद्योगों में दो लाख रुपये लगें, तब एक व्यक्ति को काम मिलता है।
- छोटे उद्योग में २५ हजार रुपये लगाने पर एक को काम दिया जा सकता है।
- गोपालन में तीन हजार रुपये से ही रोजी–रोटी मिलने की व्यवस्था हो जाती है।

व्यक्तित्व विनाशक उद्योग

- बड़े उद्योगों से मनुष्य का व्यक्तित्व छिन जाता है। यंत्र और तंत्र उस पर हावी रहते हैं। उत्पादन, वितरण और उपभोग भी मानव सापेक्ष नहीं रह जाता।
- विज्ञान और टेक्नोलॉजी के विकास के कारण भारी उद्योग खड़े होते हैं। बड़े पैमाने पर उत्पादन होता है, उसे खपाने के लिए होने वाली होड़ से सत्ता एवं सम्पत्ति जनित षड्यंत्र चलते हैं, जिससे मानव जाति, चन्द लोगों की गुलाम बन जाती है।
- वनों, चारागाहों और प्राकृतिक संसाधनों पर उद्योगपति काबिज हो जायेंगे, तो जन साधारण का जीना मुश्किल होगा।

वर्ग संघर्ष को प्रोत्साहन

औद्योगिक क्रान्ति ने गाँवों की जगह नगर बढ़ाये, परम्परागत खेती की जगह रासायनिक खेती विकसित की, मानव और मवेशी ऊर्जा की जगह अणु ऊर्जा, को बढ़ावा दिया, वर्ग संघर्ष की जड़ें सींची, जिससे विश्व में साम्राज्यवाद आया, आतंकवाद और अपराध बढ़े। उपभोक्तावादी संस्कृति का जाल फैला। पर्यावरण दूषित हुआ। रहन–सहन, शिक्षा–संस्कार, न्याय–नीति संवेदनहीन हो गयी।

लड़ाई को न्यौता

केन्द्रित अर्थव्यस्था में उत्पादन, वितरण और उपभोग एक ही हुकूमत के नियंत्रण में रखने की होड़ लड़ाइयों का कारण बनती है। बहुत से लोग लड़ाइयाँ नहीं चाहते, पर उनका दैनिक जीवन ही उन लड़ाइयों का पोषक होता है, यह महसूस नहीं करते। हम दुनिया के दूर कोने में बनी वस्तुएँ इस्तेमाल करते रहेंगे, तब तक लड़ाई को न्यौता मिलता रहेगा।

यन्त्र

यन्त्र चार प्रकार के हैं—

- तारक यंत्र (आदमी व पशु की शक्ति बढ़ाने वाले, चरखा, करघा, कोल्हू,चक्की आदि)
- मारक यंत्र (तोप, बम आदि)
- सहायक यंत्र (लोहार, बढ़ई आदि के औजार)
- समय साधक यंत्र (रेल, मोटर, जहाज, तार, रेडियो आदि)

जो यंत्र शोषण करने का साधन न हों, जिनसे मनुष्य का श्रम हल्का हो, उनका विरोध नहीं।

यन्त्र-मर्यादा

- एक हाथ से काम हो, वहाँ दो हाथ मत लगाओ।
- जब हाथों को सहायता की जरूरत हो, तब पशु शक्ति का सहारा लो।
- जहाँ पशु शक्ति कमजोर पड़े, वहाँ पावर का उपयोग करो।
- मानव शक्ति, पशु शक्ति, पावर शक्ति को प्रतिस्पर्धी नहीं, परिपूरक बनाने से ही प्रकृति व पर्यावरण का रक्षण होता है।

जीवित और जड़ यन्त्रों की प्रतिद्वन्द्विता

हिन्दुस्तान के लाखों गाँवों में फैले हुए ग्रामवासी रूपी करोड़ों जीवित यंत्रों के विरुद्ध जड़ यंत्रों की प्रतिद्वन्द्विता प्रारम्भ हुई और कारीगरों की अँगुलियाँ काट दी गयीं, तब महात्मा गाँधी ने कहा कि हमें मारक यंत्रों का विरोध करना चाहिए और ऐसे सादे औजारों, साधनों या यंत्रों का, जो व्यक्ति की मेहनत बचाये और झोपड़ियों में रहने वाले करोड़ों लोगों का बोझ कम करें– उपयोग करना चाहिए। खादी ग्रामोद्योग खड़े हुए, जिनके कारण प्रति वर्ष रोजगार में वृद्धि की दर १ प्रतिशत है, जबकि जड़ यंत्र १६.६ प्रतिशत की दर से बेरोजगारी बढ़ा रहे हैं।

चरखा

आर्थिक क्षेत्र में स्वावलम्बन
सामाजिक क्षेत्र में समानता
राजनीतिक क्षेत्र में विकेन्द्रीकरण
धार्मिक क्षेत्र में समन्वय

चरखे से सधा
जन प्रयास और जन नियंत्रण पर आधारित
उत्पादन प्रणाली तथा स्वेच्छा पर आधारित
सहयोग का ऐसा दूसरा साधन कोई है?

राष्ट्रीय उपासना

समाज और देश की सम्पत्ति का उपयोग करने वाले सम्पत्ति में वृद्धि करना चाहते हैं, उन्हें गाँधी जी ने चर्खा चलाने को कहा। यह बीमार और मुसाफिर भी चला सकता है। चर्खा छोड़ ऐसा कोई साधन नहीं है, जिससे हुए उत्पादन को हर कोई शरीर पर धारण करे। कताई राष्ट्रीय उपासना बन सकती है। आज तक वैसा कोई उद्योग नहीं खोजा जा सका, जिसे आम आदमी अपनाये और समाधान पाये।

जीवन-लक्षी कार्यक्रम

*दिल उदार, **दिमाग ठण्डा, व्यवहार प्रांजल** और समाज, देश–दुनिया को एक नेक बनायें।*

- प्रतिदिन परिणाम चाहते हैं, ***तो गोपालन करें।***
- एक माह में परिणाम चाहते हैं, ***तो सब्जी उगायें।***
- तीन माह में परिणाम चाहते हैं, ***तो खेती करें।***
- साल दो साल में परिणाम चाहते हैं ***तो वृक्ष लगायें।***
- दस साल में परिणाम चाहते हैं, ***तो बाग लगायें।***
- जीवन में परिणाम चाहते हैं ***तो चरित्र निर्माण करें।***

जीवन दृष्टि

- विचार का बीज बोकर कार्य पैदा करें।
- कार्य का बीज बोकर स्वभाव पैदा करें।
- स्वभाव का बीज बोकर चरित्र पैदा करें।
- चरित्र का बीज बोकर सौभाग्य की फसल तैयार करें, जिससे सत्–चित् आनन्द फले, शान्ति की बयार चले।

कर्तव्य

- कायरता का निराकरण करने के लिए हिंसा वृत्ति छोड़ें।
- गरीबी का निराकरण करने के लिए स्वामित्व भाव छोड़ें।
- अन्याय का निराकरण करने के लिए सत्याग्रह करें।
- शासन का निराकरण करने के लिए सेवा प्रभावी बनायें।
- असमानता का निराकरण करने के लिए बौद्धिक और शारीरिक श्रम का समान मूल्य मानें।

'दसमुख' खाये, 'चारभुजा' खिलाये

- बालक उत्पादन नहीं करते।
- बीमार उत्पादन नहीं करते।
- वृद्ध उत्पादन नहीं करते।
- श्रीमन्त उत्पादन नहीं करते।
- धीमन्त उत्पादन नहीं करते
- अधिकारी उत्पादन नहीं करते।
- नेता उत्पादन नहीं करते।

चौबीसों घण्टे उपभोग करने वाले २४ मिनट भी प्रत्यक्ष उत्पादन में हिस्सा न लें तो समाज कहाँ रहेगा? 'दसमुख' (दानव) देश को खाता है और चारभुजा (देव) देश को खिलाता है।

क्रान्तिकारी कदम

- उत्पादक समाज बनाना।
- उत्पादित माल का सम वितरण और सम्यक् उपयोग करने पर बल देना।
- सम्पत्ति का विभाजन और संग्रह का विसर्जन कराके नागरिकों के बीच की दूरी घटाना।
- सांस्कृतिक चेतना को पोषण देना।

- एक बनें, नेक बनें।
- जहं सुमति तहं सम्पत्ति नाना।
- संपति सब रघुपति के आही।
- सबै भूमि गोपाल की।
- मेहनत सेवा राम की अब न घड़ी आराम की।

वाद

- सत्ता को केन्द्र में रखकर काम करे, वह **साम्राज्यवाद**।
- मुनाफे को केन्द्र में रखकर काम करे, वह **पूँजीवाद**।
- आवश्यकता को केन्द्र में रखकर काम करे, वह **समाजवाद**।
- पड़ोसी को केन्द्र में रखकर काम करे, वह **गाँधीवाद**।
- दीनबन्धु को केन्द्र में रखकर काम करना **परमार्थ** है।

जीवन-दर्शन

- जो समाज का अन्न खाकर सेवा नहीं करते, उनके त्याग–वैराग्य का सामाजिक मूल्य क्या?
- जो गुण सामाजिक मूल्य नहीं बनते, वे दोष हो जाते हैं।
- सामाजिक ऋण चुकाने की भावना से काम करना **यज्ञ है।**
- परहित तन–मन–धन देना **दान है।**
- काम, क्रोध, मद–मोह आदि विकारों की शुद्धि के लिए त्याग करना **तप है।**
- कुशलता पूर्वक काम करना **योग है।**
- प्राप्त फल समाज/देश/विश्व को अर्पित करना **संन्यास है।**
- भाव और यत्न मिलाने का अर्थ है– आत्म प्राप्ति, परमात्म–दर्शन।

परजीवी

समाज में अनुत्पादक और परजीवी कौन है? थैली वाले और लाठी वाले। सम्पत्ति की सुरक्षा के नाम पर सरकारी स्तर पर पुलिस–फौज और असरकारी स्तर पर दरबान–पहरेदार है। जो काम नहीं पाते, निकाले जाते या हरामखोरी करते हैं, उनमें से गुण्डे तैयार होते हैं। उनसे छुटकारा पाना है, तो उत्पादक बनो।

उत्पादन की **प्रक्रिया**, उत्पादन के **साधन** और उत्पादन की **पद्धति** ऐसी हो कि मनुष्य एक–दूसरे के निकट आये, गुण–विकास में मदद मिले और संवेदनशीलता बढ़े।

सांस्कृतिक-चेतना

- भूख लगे तब खाना **प्रकृति** है।
- अधिक खाना **विकृति** है।
- भूखों को खिलाकर खाना **संस्कृति** है।
- उत्पादन का साधन देकर भूखों के लिए रोटी की स्थायी व्यवस्था करना **क्रान्ति** है।

जीवन-शास्त्र

- कमजोर को बलवान बनाना : ***समाजशास्त्र सम्मत।***
- पापी को पुण्यात्मा बनाना : ***धर्मशास्त्र सम्मत।***

दोनों शास्त्र अलग–अलग होने से जीवन खण्डित हुआ। इसलिए महात्मा गाँधी ने सन्तों में सिपाही और सिपाहियों में सन्तों के गुण उजागर करने वाली 'आचार संहिता' बनायी।

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, असंग्रह,
शरीर श्रम अस्वाद सर्वत्र भय वर्जनः।
सर्व धर्म समानत्व स्वदेशी स्पर्श भावना,
विनम्र व्रत निष्ठा से ये एकादश सेव्य हैं।।

नत्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं न पुनर्भवम्।
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्ति नाशनम्।।

लक्ष्य

- स्पर्धा नहीं, सहयोग
- शोषण नहीं, पोषण
- उपभोग नहीं, उपयोग
- स्वच्छंदता नहीं, स्वतंत्रता
- शासन नहीं, अनुशासन

लोकाभिमुख संयम

- सम्पन्न वर्ग यथास्थिति चाहता है, ताकि अमीरी को आंच न आये।
- विपन्न वर्ग, परिवर्तन चाहता है, ताकि अमीर बना जा सके।
- दरिद्रता को असंग्रह व्रत बनाने से अमीरी की आकांक्षा मिटती है और स्वैच्छिक सादगी आती है।
- संयम लोकाभिमुख हो जाता है। संयमी लोक नेता बन जाता है।

क्रान्तिकारी भूमिका

क्रान्तिकारी बड़े त्यागी होते हैं। भूख–प्यास सहते हैं। गरीबी में रहते हैं। महात्मा गाँधी ने त्याग, भूख और गरीबी को व्रत बनाया। व्यक्तिगत साधना सामाजिक साधना बनी। साधना को सेवा और स्वावलम्बन की क्रान्तिकारी भूमिका मिल जाने से देश आजाद हुआ। देशवासियों की दशा और दिशा बदली।

नया समाज कैसे बने?

सामन्तवादी संस्कार, पूंजीवादी रहन–सहन, समाजवादी नारों और क्रान्तिकारी घोषणा से–

- तंत्र टिकता है लोक नहीं।
- दल जीतता है दिल नहीं।
- धार्मिक प्रभावी होता है धर्म नहीं।

पारिवारिक परिवेश, सामाजिक शिष्टाचार, आर्थिक व्यवस्था और आभिजात्य संस्कृति में बुनियादी परिवर्तन हुए बिना नया समाज़ कैसे बनेगा? अन्तर्विरोधों से अशान्ति पैदा होती है।

परस्पर विरोधी विभाग

- अशान्ति शमन विभाग - शिक्षक
- अशान्ति दमन विभाग - पुलिस

शमन वाले जिम्मेदार हों तो दमन की जरूरत ही न रहे।

विनाश चाहिए या विकास

- विनाशकारी व्यवस्था चाहिए या विकासकारी?
- ८० बच्चों का शिक्षण चाहिए या एक हथियार बन्द सैनिक?
- ५२० कक्षाओं का सामान चाहिए या एक टैंक?
- ४० हजार अस्पताल चाहिए या एक जैट?
- ३० लाख टन गेहूँ चाहिए या एक विमान?
- एक लाख टन चीनी चाहिए या एक बमवर्षक जहाज?
- विश्व के तमाम नागरिकों की सुविधा चाहिए या एक एस.एस. प्रक्षेपास्त्र श्रेणी?
- शासन करने वाली शक्ति चाहिए या विश्व शान्ति?
- मुट्ठी भर लोगों का विकास चाहिए या सर्वोदय?
- तनाव, बनावट, मिलावट चाहिए या सत् चित् आनन्द?

कमजोरी का फायदा उठाने वाली जमात

- अशान्ति का फायदा उठाती है पुलिस
- झगड़े का फायदा उठाते हैं वकील
- बीमारी का फायदा उठाते हैं डाक्टर
- बेघर का फायदा उठाते हैं किरायाखोर
- जरूरतमंदी का फायदा उठाते हैं दलाल
- व्यसनों का फायदा उठाते हैं ठेकेदार
- भक्ति का फायदा उठाते हैं पुजारी

जिस समाज में कमजोरी का फायदा उठाना वैध है, वहाँ सभ्यता और संस्कृति की **चर्चा होती है, अर्चा नहीं।**

विसंगतियों के कारण

- सिद्धान्तहीन राजनीति
- श्रमहीन धन
- नैतिकता हीन व्यापार
- चरित्रहीन शिक्षण
- विवेकहीन आनन्द
- मानवताहीन विज्ञान
- त्यागहीन पूजा
- नोट पर टिका अर्थतंत्र
- वोट पर टिका राजतंत्र

अशान्ति की जड़

- जनता की दुर्बलता
- विद्वानों की क्रिया–शिथिलता
- महाजनों की अर्थ–लोलुपता
- सन्तों की वाग्–विलासिता
- शासकों की सत्ता–पिपासा
- दुर्जनों की मुखरता
- सज्जनों का मौन

जीवन-शिक्षा

पुरानी	नई
❑ साक्षरता मूलक	❑ सार्थकता मूलक
❑ शिक्षण प्रधान	❑ संस्कार प्रधान
❑ कुछ के लिए	❑ सर्व के लिए
❑ भेदभाव का विरोध नहीं करती	❑ सामाजिक समरसता चाहती है।
❑ चोरी करना पाप मानती है	❑ संग्रह को भी मान्यता नहीं देती।
❑ क्षमता की इज्जत करती है	❑ समता को महत्व देती है।
❑ लक्ष्मी, दुर्गा, सरस्वती को देव मानती है	❑ देवों को मानवता की सेवा का साधन मानती है।
❑ केन्द्रीकरण की पोषक	❑ विकेन्द्रीकरण की हिमायती।
❑ समस्याओं से बेखबर	❑ समाधान के लिए तत्पर।
❑ जीवनघाती व्यापार को नजरंदाज करती है	❑ जीवन पोषक व्यापार को प्रश्रय देती है।
❑ ज्ञान कर्म को अलग रखती है	❑ ज्ञान कर्म का समन्वय करती है।
❑ विद्या स्थानों की चारदीवारी से घिरी है	❑ जीव-जगत् को घेरे हुए है।

निष्ठा की कमी

- अहिंसा पर श्रद्धा है निष्ठा नहीं
- सत्य पर श्रद्धा है, निष्ठा नहीं
- परमार्थ पर श्रद्धा है निष्ठा नहीं

चाह

- चरित्र की उन्नति।
- कुशलता की पराकाष्ठा।
- जागृत शान्ति।
- अन्तर्बाह्य स्वच्छता।
- बड़ों के प्रति आदर, बराबर वालों से मैत्री, छोटों के प्रति वात्सल्य और भिन्न मत वालों के प्रति उदारता।
- बुराई की निन्दा करने के बजाय भलाई में प्रवृत्त रहने का संकल्प।

चर्या

- हृदय में राम, हाथ में काम, मुँह में नाम।
- पढ़ना एक गुना, चिन्तन दो गुना, आचरण चौगुना।

सेवा व्यक्ति की भक्ति समाज की

ग्रामे ग्रामे सभा कार्या, गेहे गेहे शुभा कथा।
पाठशाला मल्लशाला गवां सदनमेव च।।

- जन जागरण के लिए गाँव–गाँव में सभा करें।
- संवदेना जगाने के लिए घर–घर सत्साहित्य पहुँचायें।
- अज्ञान मिटाने के लिए जीवन–शिक्षण बढ़ायें।
- अभाव मिटाने के लिए शक्ति सामर्थ्य बढ़ायें।
- पुष्टि–तुष्टि के लिए गोपालन को प्रोत्साहन दें।

स्वार्थ प्रेरणा, समाज प्रेरणा, विज्ञान–प्रेरणा और भगवत् प्रेरणा के साथ युग प्रेरणा मिलती है, तब व्यक्ति की सेवा एवं समाज की भक्ति होती है। **'मेहनत इंसान की दौलत भगवान की।'**

शिवोभूत्वा शिवं यजेत्

- हम अच्छा खाना चाहते हैं तो सबके लिए वैसी सुविधा करें।
- हम पर्याप्त कपड़ा चाहते हैं तो सबके लिए वैसी सुविधा करें।
- हम हवादार मकान चाहते हैं तो सबके लिए वैसी सुविधा करें।
- हम पढ़ना–लिखना चाहते हैं तो सबके लिए वैसी सुविधा करें।
- हम मनोरंजन चाहते हैं तो सबके लिए वैसी सुविधा करें।
- जब तक सबकी प्राथमिक आवश्यकताएं पूरी न हों, तब तक विलास की सामग्री न जुटायें।
- जब तक ग्रामीण क्षेत्र के हर सोलह वर्ष से ऊपर की आयु के सशक्त व्यक्ति को पूर्ण मजदूरी देने की व्यवस्था नहीं हो, तब तक कोई ओवर टाइम न ले और न किसी की वेतन वृद्धि हो।
- जब तक सामाजिक सेवा का लाभ उपेक्षित गाँवों, कस्बों, मलिन बस्तियों तक न पहुँचें, तब तक शहरों में नये कॉलेज, अस्पताल, क्लब न खुलें।
- राहत को क्रान्ति में बदलने की प्रक्रिया है : **"अन्तः शुद्धिः बहिः शुद्धिः श्रमः शान्तिः समर्पणम्"।**

लोक प्रतिनिधि एवं लोक नेता

- लोक प्रतिनिधि लोकमत के अनुसार यानी लोकमत के पीछे चलता है।
- लोक नेता कालप्रवाह के साथ प्रगति करने की राह सुझाता है।
- लोक प्रतिनिधि दण्ड मूलक बहुमत प्रधान राजनीति का अंग है।
- लोक नेता समझ मूलक जन सम्मत लोकनीति का अंग है।
- लोक प्रतिनिधि अपने अपराध के लिए क्षमा और दूसरों के लिए न्याय चाहता है।
- लोक नेता अपने लिए न्याय और दूसरों के लिए क्षमा चाहता है।
- लोक प्रतिनिधि सरकारी अनुदान से काम करवाने का आश्वासन देता है।
- लोक नेता जन अभिक्रम से काम करता / करवाता है।
- लोक प्रतिनिधि अधिकारों की उपज है।
- लोक नेता कर्तव्य की देन है।

राजनीति और लोकनीति

- राजनीति में प्रशासन मुख्य है, लोकनीति में अनुशासन।
- राजनीति में सत्ता मुख्य है, लोकनीति में सेवा।
- राजनीति में नियंत्रण मुख्य है, लोकनीति में संयम।
- राजनीति में अधिकारों की होड़ मुख्य है, लोकनीति में कर्तव्यों का आचरण।
- राजनीति में विपक्ष की प्रतिष्ठा घटाना मुख्य है, लोकनीति में सबकी प्रतिष्ठा बढ़ाना।
- राजनीति में संविधान निष्ठा व व्यक्ति निष्ठा मुख्य है, लोकनीति में नैतिकता।
- राजनीति में शान मुख्य है, लोकनीति में समाधान।

युग बदलो

स्वराज्य के बाद बँटवारे का युग आया और बँटवारे के साथ बिखराव। न अखिल भारतीय मानस रहा, न अखिल भारतीय व्यक्ति। भारतीयता खण्डित हुई। भारतीय नागरिक जाति, पंथ, भाषा, लिपि में खो गया। कन्याकुमारी से लद्दाख, सौराष्ट्र से नागालैण्ड के मनुष्य एक दूसरे को चाहने लगें तो वह मिल जायेगा। तब, अपने आप ही अखिल भारतीय मानव विश्व मानव का जनक होगा। मनुष्य–मनुष्य के साथ जहाँ प्रेम से मिलता है, वहाँ ईश्वर होता है।

दिशाहीनता का दण्ड

- राजनीति दिशाहीन होने के कारण जो भारत स्वतंत्रता मिलने से पूर्व साहूकार था, वह आज कर्जदार है।
- दुनिया के विदेशी कर्जदार देशों की सूची में दिसम्बर १९९५ के बाद भारत का स्थान दूसरा है।
- सन् १९९१–९२ में हमारे केन्द्रीय बजट का २३.४% भाग कर्जों का ब्याज चुकाने में खर्च हुआ। अनुमान है कि सन् २००० तक ५०% सिर्फ कर्जों का ब्याज चुकाने में ही जायेगा।
- महालेखा परीक्षक की रपट के अनुसार गत तीन वर्षों से देश पर ४० हजार करोड़ रुपये प्रतिवर्ष की दर से विदेशी कर्ज बढ़ा है।
- आन्तरिक कर्ज १९९४–९५ से ४,८३,५४५ करोड़ हो गया।
- देशी–विदेशी कर्ज मिलाकर प्रति मिनट १५ लाख रुपये यानी प्रति घण्टे ९ करोड़ रुपये चुकाते रहने वाली रीति–नीति बदले बिना चारा नहीं है।

का चुप साधि रहेहु बलवंता

देश के साथ–साथ इस जगती के धर्म, ईमान, चरित्र की कसौटी कौन हम हैं ?

हम चलते हैं, तो सतयुग होता है।
हम खड़े होते हैं तो त्रेता होता है।
हम बैठते हैं तो द्वापर होता है।
हम सोते हैं तो कलियुग होता है।

बहुत सो चुके। मां भारती गा रही है। **'बीती विभावरी जागरी'**। जागो। सूर्य तुम्हारा नेत्र है। वायु तुम्हारा प्राण है। अन्तरिक्ष तुम्हारी आत्मा है। पृथ्वी तुम्हारा शरीर है। तुम अपने को अपराजित समझकर धरती पर आये हो, तो बेसुध क्यों हो? का चुप साधि रहेहु बलवंता।

सुनो, गुनो

- शुद्धि की खोज करने वाले धर्माचार्यों सुनो,
- सम्पत्ति की शोध करने वाले अर्थशास्त्रियों सुनो,
- विद्या की शोध करने वाले शिक्षाशास्त्रियों सुनो,
- शक्ति की शोध करने वाले, राजनेताओं सुनो,

हम भले ही किसी भी क्षेत्र में रहते हों, और कोई भी काम करते हों, लेकिन सारी मानवता के साथ हमारी एकरूपता है और उसकी जो भी समस्याएं हैं, वे सब हमारी समस्याएं हैं। हम उनका सम्यक् समाधान निकालें, जिससे मानव मात्र को सम्मानपूर्ण जीवन, न्याय एवं शान्ति की उपलब्धि हो। आपसी बैर मिट जाय, विषमता समाप्त हो जाय। न कोई अज्ञानी और न कोई अवगुणी रहे।

वयरू न कर काहू सन कोई,
राम प्रताप विषमता खोई।
नहि कोई अबुध न लच्छन हीना,
सब सुखी सब सच्चरित.....।।

नजरों के साथ नजारा बदलें

- वर्ग–संघर्ष या दलित वर्ग को साधन बनाने से हुआ परिवर्तन सबको एक नहीं रख सकता।
- पारस्परिकता को साधन बनाकर हुआ परिवर्तन सबको '**एक-नेक**' रख सकता है।
- अलगाव, अन्याय, अभाव, अज्ञान को दूर करने का साधन विज्ञान न बना तो वह सर्वनाश करेगा।
  राजनीति + विज्ञान = सर्वनाश
  अध्यात्म + विज्ञान = सर्वोदय
- तोड़ने वाली ताकत की जगह जोड़ने वाली ताकत बढ़ायें।

जमाने के लायक बनें

विज्ञान–युग में मानव चन्द्रमा पर चहलकदमी कर आया। मंगल–यात्रा की तैयारी है। अग्नि, जल, वायु उसके नियंत्रण में है। दिमाग बड़ा हो गया, लेकिन दिल ? जाति, धर्म-सम्प्रदाय, भाषा, लिपि, प्रदेश व देश की चारदीवारी में उलझा है। इससे किसी न किसी बहाने झगड़े होते हैं। झगड़ों को समाप्त करना और जमाने के लायक बनना है तो **दिमाग बड़ा और दिल उदार** बनायें। सारी वसुधा हमारी है: '**उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्**।'

ना कोई बेरी ना ही बेगाना

जो परिवार तथा परिचितों के सुख–दुःख में शामिल न हों, वे कैसे सेवक हैं ? **'जे न मित्र दुख होहिं दुखारी, तिन्हहिं विलोकत पातक भारी।'** छोटे परिवार, संयुक्त परिवार, ग्राम परिवार का दायरा बढ़ाने से ही विश्व परिवार की परवरिश होती है।

जिम्मेवारी लें

स्वयंसेवी संस्थाएँ, क्लब, धार्मिक ट्रस्ट, रचनात्मक समाज, सामाजिक संगठन एक–एक क्षेत्र के समग्र विकास की जिम्मेवारी लें और आम जनता को कम से कम आहार, वस्त्र, साबुन, जूता, आवास, ईंधन, दूध, हल, बैल, बीज, साइकिल, स्कूल, सिंचाई सुविधा, मिट्टी का तेल आदि सुलभ करायें तो कथनी–करनी में एकरूपता आये, नई पीढ़ी पुरुषार्थ दिखाये, देश का नव निर्माण हो जाये।

सज्जनों के संगठन, सज्जनता के संवर्धन एवं सेवा प्रकल्पों में सहायक इकाइयाँ

●आचार्य कुल ●खादी मिशन ●शान्ति सेना ●लोक समिति ●बनवासी सेवा आश्रम ●गाँधी मिशन ●श्री मन्नारायण स्मृति संस्थान ●सृजनपीठ ●सुरभि शोध संस्थान ●ज्ञान यज्ञ ●अपना राज आन्दोलन ●गाँधी विद्या संस्थान ●भारतीय ग्रामीण महिला संघ उ.प्र. ●विश्वधर्म शान्ति सम्मेलन

आमदनी : स्वतंत्र भारत की प्रथम पंचवर्षीय योजना इस सदी के छठे दशक में बनी। उस समय संयुक्त राष्ट्रसंघ के आकलनानुसार एशिया के २५ कम विकसित देशों में भारत २०वें स्थान पर था।

४५% भारतीयों की मासिक आय १० रुपये से २० रुपये थी।
३०% भारतीयों की मासिक आय २० रुपये से ३० रुपये थी।
२४% भारतीयों की मासिक आय ३० रुपये से ४० रुपये थी।
केवल एक प्रतिशत की मासिक आय ५० रुपये से ऊपर थी।

ऊपर वाले ५% की आमदनी नीचे वाले ४०% की तुलना में ३० गुनी से ५०० गुनी अधिक थी।

स्वतंत्रता की स्वर्ण जयंती मनाने से पूर्व हम **आकलन करें** कि **आय बढ़ने के साथ अन्तर बढ़ा है या घटा ?** ६६% को कर्जदार बनाकर जो १% मालदार बने हैं, उनसे लोकतंत्र बचेगा या नहीं?

ग्रामोद्योग : दस हजार की आबादी में रहने वाले खादी–ग्रामोद्योग, अनाज, दाल–प्रशोधन, तेलघानी, गुड़–खांडसारी, फल प्रशोधन, जड़ी–बूटियों व फलों के संग्रह, खनिज–वनाधारित उद्योग, आदि काम करना चाहें, उन्हें खादी और ग्रामोद्योग आयोग सहयोग करता है। उससे लाभान्वित होने तथा उद्योग खड़े करने की **सलाह दें**। सर्व सम्मत सलाह से सरकारी योजनाओं का भी सदुपयोग संभव है।

भूमि-समस्या : देश में ७१ करोड़ एकड़ भूमि है, जिसमें से लगभग ३० करोड़ एकड़ पर ही कृषि होती है। उसमें से २३ करोड़ ७० लाख एकड़ भूमि ७५ लाख परिवारों के कब्जे में है। १ करोड़ ६२ लाख परिवारों के पास १ एकड़ से कम भूमि है। १ करोड़ ५० लाख परिवार भूमिहीन हैं। विनोबा जी के भूदान आन्दोलन से लगभग १२ लाख परिवारों को भूमि मिली। भूमि सीलिंग कानून से अधिक, भूदान से लोगों को लाभ पहुँचा है, फिर भी अभी बहुत काम बाकी है। १२ करोड़ ६५ लाख ८० हजार हेक्टेयर बंजर सुधारना है और गरीबी की रेखा से नीचे जीने वाले १ करोड़ ११ लाख परिवारों को संभालना है। उसकी **समय सापेक्ष परिणामकारी योजना बनायें।**

शिक्षक क्या करें ?

- ज्ञाननिष्ठा, विद्यार्थी निष्ठा और समाज निष्ठा सार्थक करने के लिए श्रमनिष्ठा अपनायें।
- नियत समय मनोयोग से पढ़ायें और विपरीत परिस्थितियों में भी नैतिक मूल्य बनाये रखें।
- नयी पीढ़ी को सुसंस्कृत, शीलवान लेकिन तेजस्वी बनाने वाला पाठ्यक्रम एवं कार्यक्रम अमल में लायें।
- शीलरक्षा व अशान्ति शमन की जिम्मेवारी उठायें।
- संकीर्ण भेद और पक्ष तथा सत्ता की राजनीति से मुक्त रहकर आत्म–विश्वास, कर्तव्यनिष्ठा एवं निर्माण की स्वयं प्रेरणा बनें।

आचार्य क्या करें ?

- व्यक्ति निष्ठा, ग्रंथ निष्ठा, पंथ निष्ठा से ऊपर उठकर विविध विशेषताओं में सामंजस्य स्थापित करते हुए विश्ववृत्ति विकसित करें।
- परिस्थिति परिवर्तन, विचार–परिवर्तन, हृदय परिवर्तन करने वाली जीवन शिक्षा दें, जिससे अज्ञान, अभाव, अन्याय का निराकरण हो।
- 'आई हेव नॉट कम टू डिस्ट्राय बट टु फुलफिल' हम विनाश नहीं, विकास करने आये हैं– का भाव जन–गण में जगा दें।
- व्यक्ति, समाज, राष्ट्र में आत्मचेतना और आत्मानुशासन की क्षमता जगा दें, ताकि बाहरी प्रशासन की आवश्यकता और उस पर निर्भरता उत्तरोत्तर कम होती जाय।
- प्रकृति, पशु, पर्यावरण आदि का शोषण न कर पोषण करने वाले कल्याणकारी प्रकल्प खड़े कर सृष्टि के सर्वांगीण विकास में सहायक बनें तथा स्वस्थ मानव–संबंधों की विरोधी सामाजिक समस्याओं के हल के लिए अहिंसक प्रक्रिया का प्रयोग व प्रशिक्षण का दायित्व संभालें।

संस्थान की उपलब्धियाँ

- ☞ कतल के लिए जाने वाले 60 हजार से भी अधिक गाय-बैल बचे।
- ☞ बचा हुआ गोवंश कमजोर किसानों, जरूरतमंद गाड़ीवानों और गोपालकों के बीच वितरित हुआ।
- ☞ बूढ़े बीमार, अनुपयोगी गाय-बैल (जिन्हें कोई नहीं ले गये) श्री काशी जीवदया विस्तारिणी गोशाला ने रामेश्वर में संरक्षित किया।
- ☞ जिस कठोर ऊसर भूमि में तृण भी नहीं जमता था, वहाँ उनका गोबर-गोमूत्र पड़ने से धरती का कायाकल्प हुआ। करीब 70 एकड़ भूमि से बारहों मास हरा चारा मिल रहा है।
- ☞ गोबर गैस संयंत्रों से प्राप्त उर्जा से चारा कटता है, खटालों में रोशनी और इंधन की आपूर्ति होती है।
- ☞ चारों ओर फैली हरियाली, रंग-बिरंगे फूल, चहचहाते पक्षी, नाचते मयूर, और संतुलित दाना-पानी व समुचित चिकित्सा से स्वस्थ हुई कट्टू गायों के मुक्त विचरण से वायु मण्डल सुधरा। अच्छे सांड़ों के योग से गायें गाभिन हुईं। उनकी ब्लड सीरम की जाँच होती रहने से गर्भपात नहीं हुआ। नस्ल सुधरी। जो गायें मुश्किल से एक दो लीटर दूध देती थीं, उनकी 10 से 12 लीटर तक दूध देने वाली संतति तैयार हुई। चित्रकूट, गोण्डा, गोपालपुर, सैदपुर, आजमगढ़, जौनपुर, मिर्जापुर, नौगढ़, कानपुर, वृन्दावन की गोशालाएँ उन्हें प्राप्त कर देख चुकी हैं कि देशी गायों की दुग्ध उत्पादन क्षमता बढ़ी है और दूध दिवस भी बढ़े हैं।
- ☞ वाराणसी जनपद के 70 गांवों के अनेक परिवारों ने गोपालन को रोजगार बनाया। उससे नगर के 1600 परिवारों को लगभग 4 हजार लीटर गो-दुग्ध मिलने लगा है। जिन्होंने 8 से 10 हजार रुपये पूँजी लगायी, उनकी मासिक आय एक हजार रुपये से ऊपर हो गई है।
- ☞ 'कृषि गोरक्ष्य वाणिज्यम्' के व्यापक अधिष्ठान पर **'गोरस भंडार'** खुले हैं। छाछ, घृत, रबड़ी, पेड़ा, गोरस पाक, बिस्कुट जैसे उत्पादों का प्रचलन बढ़ा है। जिनके खेतों में टमाटर, आलू, मटर हुए, उनके परिवारों में जैम, सॉस, चिप्स बनाने और मटर प्रिजर्व करने की कला महिलाओं ने सीखीं। फूलों की व्यावसायिक कृषि से गुलाब जल, गुलाब शर्बत, गुलकन्द तैयार करना संभव हुआ।
- ☞ गृहउद्योग, कुटीर उद्योग, ग्रामोद्योग और प्रशिक्षण केन्द्र बढ़े हैं।

संस्थान की कार्य-योजना

1. गोपालन के लिए हो रहे कार्यो को प्रोत्साहन देना।
2. लावारिस घूमती या कत्ल के लिए जाने वाली गायों को संरक्षण देना।
3. गोशालाओं को आधुनिक तकनीक का लाभ पहुंचाना।
4. गो संरक्षण के लिए बने आधे-अधूरे कानूनों की खामियाँ दूर करने हेतु गोवंश हत्या प्रतिबंधित करने वाला केन्द्रीय कानून बनवाना।
5. गोमांस, गोचर्म आदि क्रूर व्यवसाय में लगे लोगों को खाद, ऊर्जा, जड़ी-बूटी तथा परिपूरक उद्योगों में लगाना, ताकि रासायनिक उर्वरकों से होने वाली हानि रुके, पेट्रोलियम पदार्थों की निर्भरता में कमी आये, असाध्य बिमारियाँ घटें और कृषि, वृक्ष, जल, पशु-पक्षी, पर्यावरण शुद्धि व ऊर्जा-विकल्प से विदेशी मुद्रा बचे।
6. भुखमरी, गरीबी, बेकारी, आदि समस्याएं हल करने हेतु **गोपालग्राम योजना** पर अमल कर स्थानीय साधनों, उत्पादनों, व प्रतिभाओं को राष्ट्र-विकास में समायोजित करना।
7. हर परिवार गाय पाले और पास-पड़ोस के दस परिवारों को भी गायें पालने के लिए तैयार करे। जिनके पास गाय रखने का स्थान न हो, वे अपनी गाय गौशाला में रखें और उसके रख-रखाव के लिए घर-घर में **गोग्रास** निकालें। दूकानों, कार्यालयों में **गोलक पेटी** रखें, जिससे गायें पलें और घर-घर में गोदुग्ध पहुँचे। गोदुग्ध का संकल्प लें। मठ-मंदिर-आश्रमों में भी गो-दुग्ध का उपयोग हो- ऐसा वातावरण बनाने से गोपालन को प्रोत्साहन मिलेगा।

श्रम, सेवा, शिक्षा एवं शोध कार्यों के लिए समर्पित सुरभि शोध संस्थान को दिया गया दान
आयकर की 80 जी धारा के अन्तर्गत कर मुक्त है।
अतः आप अपना सहयोग एवं सुझाव भेजकर घर-घर गुरुकुल, गाँव-गाँव गोकुल बनाने में हाथ बटायें।
पता है—

सुरभि शोध संस्थान
बी 27/75 डी. रवीन्द्रपुरी, वाराणसी-221 010 (उ.प्र.)
फोन नं. 310035, 311500

काशी ग्राफ़िक्स, वाराणसी ✆ 355372 सहयोग राशि : पाँच रुपये मात्र